प्रथमः पाठः

वाराणसी

सरल हिंदी अनुवादः हर लाइन का अलग अनुवाद

कक्षा – 10 हिंदी

(अनिवार्य संस्कृत)

UP BOARD EXAM

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक ' संस्कृत परिचायिका ' के ' वाराणसी ' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें वाराणसी नगर की शोभा का वर्णन किया गया है।

वाराणसी सुविख्याता प्राचीना नगरी।

वाराणसी अत्यधिक विख्यात प्राचीन नगरी है।

इयं विमलसलिलतरङ्गायाः गङ्गायाः कूले स्थिता।

यह स्वच्छ जल की तरंगोंवाली गंगा के किनारे स्थित है।

अस्याः घट्टानां वलयाकृतिः पंक्तिः धवलायां चन्द्रिकायां बहु राजते।

इसके घाटों की घुमावदार आकृतिवाली पंक्ति श्वेत चाँदनी में बहुत सुन्दर लगती है।

अगणिताः पर्यटकाः सुदूरेभ्यः देशेभ्यः नित्यम् अत्र आयान्ति , अस्याः घट्टानाञ्च शोभां विलोक्य इमां बहु प्रशंसन्ति ।

दूर - दूर के देशों से असंख्य पर्यटक यहाँ नित्य प्रति आते हैं और इसके घाटों की शोभा को देखकर इसकी बहुत प्रशंसा करते हैं ।

वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते ।

वाराणसी में प्राचीनकाल से ही घर - घर में विद्या की अलौकिक ज्योति प्रकाशित है ।

अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति , जनानां ज्ञानञ्च वर्द्धयति ।

अब भी यहाँ संस्कृत - वाणी की धारा निरन्तर बह रही है और लोगों के ज्ञान को बढ़ा रही है ।

अत्र अनेके आचार्याः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः

इस समय यहाँ अनेक आचार्य , उच्च कोटि के विद्वान् वैदिक - साहित्य के अध्ययन - अध्यापन में लगे हुए हैं ।

न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति , निःशुल्कं च विद्यां गृह्णन्ति |

न केवल भारतीय अपितु विदेशी भी देववाणी - संस्कृत के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं और निःशुल्क विद्या ग्रहण करते हैं।

अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः , संस्कृतविश्वविद्यालयः , काशीविद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति , येषु नवीनानां प्राचीनानाञ्च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलितः ।

यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय , संस्कृत विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ - ये तीन विश्वविद्यालय हैं , जिनमें नवीन और प्राचीन ज्ञान - विज्ञान के विषयों का अध्ययन चलता रहता है।

एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषायाश्च केन्द्रस्थलम् अस्ति।

यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत - भाषा का केन्द्र - स्थल है।

इत एव संस्कृतवाङ्मयस्य संस्कृतेश्च आलोकः सर्वत्र प्रसृतः ।

यहीं से संस्कृत - साहित्य और संस्कृति का प्रकाश सर्वत्र फैला है।

मुगलयुवराजः दाराशिकोहः अत्रागत्य भारतीय - दर्शन - शास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत् ।

मुगल युवराज दारा शिकोह ने यहाँ आकर भारतीय दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया था ।

स तेषां ज्ञानेन तथा प्रभावितः अभवत् , यत् तेन उपनिषदाम् अनुवादः पारसीभाषायां कारितः ।

वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया ।

इयं नगरी विविधधर्माणां संगमस्थली ।

यह नगरी अनेक धर्मों की संगमस्थली है ।

महात्मा बुद्धः , तीर्थङ्करः पार्श्वनाथः , शङ्कराचार्यः , कबीरः , गोस्वामी तुलसीदासः , अन्ये च बहवः महात्मानः अत्रागत्य स्वीयान् विचारान् प्रासारयन् ।

महात्मा बुद्ध , तीर्थंकर पार्श्वनाथ , शंकराचार्य , कबीर , गोस्वामी तुलसीदास और दूसरे अनेक महात्माओं ने यहाँ आकर अपने विचारों का प्रसार किया ।

न केवलं दर्शने , साहित्य , धर्मे , अपितु कलाक्षेत्रेऽपि इयं नगरी विविधानां कलानां , शिल्पानाञ्च कृते लोके विश्रुता ।

न केवल दर्शन , साहित्य और धर्म में ही अपितु कला के क्षेत्र में भी यह नगरी तरह - तरह की कलाओं और शिल्पों के लिए विश्व में प्रसिद्ध है ।

अत्रत्याः कौशेयशाटिकाः देशे देशे सर्वत्र स्पृह्यन्ते ।

यहाँ की रेशमी साड़ियाँ हर देश में सर्वत्र पसन्द की जाती हैं ।

अत्रत्याः प्रस्तरमूर्तयः प्रथिताः ।

यहाँ की पत्थर की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हैं ।

इयं निजां प्राचीनपरम्पराम् इदानीमपि परिपालयति — तथैव गीयते कविभिः-

यह अपनी प्राचीन परम्परा का इस समय भी पालन कर रही है । अतएव कवियों के द्वारा गाया गया है -

मङ्गलं मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम् ।

जहाँ मरना कल्याणकारी है , जहाँ भस्म ही आभूषण है

कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केनोपमायते ॥

और जहाँ लँगोट (ही) रेशमी वस्त्र है , वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है ? (इसकी तुलना किससे की जा सकती है ?)

JOIN TELEGRAM FOR PDF

VISIT WEBSITE FOR ALL PDF –

WWW.GYANSINDHUCLASSES.COM

THANKS FOR REACHING US

THANKS FOR WATCHING

PLEASE VISIT MY WEBSITE

PLEASE SHARE AND SUBSCRIBE